अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व विज्ञ (वर्ष : 2024) दिनांक : 24.08.2024

समय सीमा : 3 घंटा द्वितीय वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

भगवती भाष्य (2)–70

प्र. 1 कोई पांच पारिभाषिक शब्द लिखें– 5

(क) अपने शरीर-प्रमाण भूमि को क्या कहते हैं?

(ख) ज्ञान, दर्शन और चारित्र की विधिवत् पालना करने वाला।

(ग) दृष्टि को किसी एक पुद्गल पर निविष्ट करना।

(घ) गोपुर के दोनों कपाटों के संधिस्थान पर लगाई जाने वाली कील।

(ड़) जहां एक दिशा में पताका हो।

(च) चन्द्र के चारों ओर दिखलाई पड़ने वाला वलयाकार प्रकाश-समूह।

(छ) मूर्धाभिषिक्त राजा के घर से भिक्षा लेना।

प्र. 2 कोई पांच प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए– 5

(क) 'समतुरंगेमाण' का अर्थ लिखें।

(ख) 'परियारेमाणा' से क्या तात्पर्य है?

(ग) एक अहोरात्र में कितने मुहूर्त्त होते हैं?

(घ) एक भक्ति का निद्रा-चक्र कितने मिनट में पूरा होता है?

(ड़) 'महापर्यवसान वाले' से क्या तात्पर्य है?

(च) 'अबीज' का शब्दार्थ लिखें।

(छ) मुनि के लिए आहार संबंधी एषणाएं कितनी व कौन सी है?

प्र. 3 कोई दस प्रश्नों के उत्तर तीन से पांच पंक्तियों में दें– 30

(क) क्या वेदना और निर्जरा एक है? स्पष्ट करें।

(ख) सामायिक चारित्र की जघन्य तथा उत्कृष्ट कालावधि कितनी और क्यों?

(ग) जीव के परलोक गमन और लेश्या का क्या नियम है?

(घ) किस अपेक्षा से कहा गया है कि वायुकायिक जीव स्यात्, सशरीर निष्क्रमण करता है। स्यात् अशरीर निष्क्रमण करता है?

(ड़) आयुष्य वेदन के सिद्धान्त को स्पष्ट करें।

(च) बहुवचनान्त सूत्रों में कितने दण्डकों के तीन भंग होते हैं और कौन से होते हैं?

(छ) 'श्रुत्वा' किसे कहते हैं? इस श्रेणी में कौन-कौन आते हैं?

(ज) अनुत्तर विमान के देवों में मोह की कौन सी अवस्था होती है और क्यों?

(झ) ठाणं के परिग्रह का उल्लेख करते हुए बताएं कि नैरयिक के पास तीसरे प्रकार के परिग्रह-पदार्थ का निषेध क्यों किया गया है?

(ञ) पंचेन्द्रिय जीवों के विरह काल का यंत्र लिखें।

(ट) प्रत्याख्यान आयुष्य-बंध का हेतु भी बनता है इसकी मीमांसा करें।

(ठ) जीव सबसे अल्प आहार किस समय करता है और क्यों?

प्र. 4 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें– 15

(क) कोई तीन प्रसंगों से सिद्ध करें कि भगवान महावीर के केवली हो जाने पर भी पार्श्व की परम्परा स्वतंत्र रूप से चल रही थी?

(ख) कर्मों की स्थिति, अबाधाकाल व निषेक काल का यंत्र लिखें।

(ग) सिद्ध करें कि कर्म अकृत नहीं है।

(घ) सागरोपम कितना होता है श्वेताम्बर तथा दिगम्बर परम्परा में क्या अन्तर है?

(ड़) लोक संज्ञा तथा ओघ संज्ञा को व्याख्यायित करें।

प्र. 5 परमाणु और स्कंध के अवस्थान काल और अन्तर काल के नियमों का प्रतिपादन करें तथा उसके यंत्र को लिखें।

अथवा

वेदक यावत् चरम इन सोलह पदों के कर्मबंध की नियमा क्या है? 15

झीणी चर्चा–30

प्र. 6 कोई दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दें– 10

(क) दर्शन मोहनीय का उपशम तथा क्षयोपशम किस गुणस्थान तक होता है?

(ख) समुच्चय दृष्टि से शुक्ल भाव लेश्या किस भाव में है?

(ग) अज्ञानित्व किसकी अपेक्षा से शाश्वत है और क्यों?

(घ) कौन से आगम के किस प्रसंग में निर्जरा के बारह भेदों का वर्णन है?

(ड़) एक उदाहरण द्वारा सिद्ध करें कि नरक में छहों भाव लेश्यायें होती हैं।

(च) छेदोपस्थापनीय चारित्र का जघन्य व उत्कृष्ट अन्तर कितना है और कौन से आगम में दिया गया है?

(छ) चौदहवें गुणस्थान को अमर क्यों नहीं कहा गया?

(ज) तीर्थंकर के वेदनीय पुण्य और पाप दोनों क्यों बताया गया है?

(झ) जीव-परिणामी के भेद लिखें।

(ञ) छहों नियंठा को कौन से चावलों के समान बताया गया है?

(ट) आहारक शरीर के निर्माण को प्रमाद की अपेक्षा से क्या कहा गया है और इसका साक्ष्य किसमें है?

प्र. 7 ढाल 14 का सारांश लिखें। 8

अथवा

बायालीस दोष, बावन अनाचार और पांच महाव्रत–ये छः में कौन? नौ में कौन? इनका मूलगुण या उत्तर गुण तथा निजगुण या परगुण और किन भावों में समावेश है?

प्र. 8 कोई तीन पद्यों का शब्दार्थ लिखें– 12

(क) वेदनी नाम नै गोत्र देव नो, दीसै छै पुन्य पाप।
आयु पुन्य अरू पाप घातिया, बलि बहुश्रुत नीं थाप।।

(ख) मोहणी खय थी खायक-सम्यक्त लहै रे, सुध श्रद्धा ते निरवद उज्जल लेख रे।
खायक-चारित्र दूजो गुण बली रे, ए करणी लेखे पिण निरवद पेख रे।।

(ग) चारित्र ले सहु विराधियो, रह्यो चोथे गुणठाण।
उत्कृष्ट पणै असंख भव, जघन्य सुधर्म बंध जाण।।

(घ) दोष तणो प्राछित लिये जी, पिण अव्रत-आश्रव नांय।
तिणसूं छठो गुणठाण छै जी, षट् नियंठा कह्या जिनराय।।